नासिरा शर्मा

(जन्म - 22 अगस्त, 1948 इलाहाबाद)

प्राक्कथन

प्राक्कथन

स्नातकोत्तर पढ़ाई के दौरान मैंने बहुत-सी कहानियाँ पढ़ी | जिसमें जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद, जैनेंद्र, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, कमलेश्वर, मन्नू भंडारी, हरिशंकर परसाई, रामदरश मिश्र, नासिरा शर्मा आदि साहित्यकारों की श्रेष्ठ कहानियाँ पढ़ने का मुझे मौका मिला | आधुनिक कहानीकार आज के महानगरीय जीवन, सामाजिक, राजनीतिक तथा आधुनिक परिवेश को अपनी कहानियों में वाणी देने का सफल प्रयास कर रहे हैं | आज की कहानी मानव जीवन के यथार्थ से जुड़ी है | अत: मानव चाहे ग्राम का हो या नगर का उसके दैनिक जीवन का यथार्थ चित्र कहानी में रू-ब-रू उतर रहा है |

प्रेरणा एवं विषय चयन :

वर्तमान कहानियों में चित्रित नारी की स्थिति विषय वस्तु का सबसे बड़ा आधार हैं | आधुनिक कहानिकारों ने आज की नारी के विविध रूप, ग्रामीण तथा महानगरीय विभीषिका का वास्तविक चित्रण किया हैं | इस काल की कहानियों का अध्ययन करते समय मुझे विषय वस्तु के रूप में एक समान तत्व मिला वह है - वर्तमान समाज की समस्याओं को आज के कहानीकार रू-ब-रू प्रस्तुत कर रहे हैं | इन समस्याओं को प्रस्तुत करनेवाले रचनाकारों में से नासिरा शर्मा एक प्रमुख कहानीकार है |

नासिरा की कहानियों ने मुझे प्रभावित किया | नासिरा शर्मा का 'संक्षिप्त परिचय' में मैंने पढ़ा 'ईरान क्रांति की कहानियाँ', 'अफगान : बुजकशी का मैदान' जैसे नाम पढ़े | मुझे लगा उन्होंने विश्व को अपने साहित्य में समेटा हैं | जिससे उनका साहित्य पढ़ने की ललक बढ़ी | मैंने नासिरा शर्मा के साहित्य को लेकर संपन्न शोध कार्य को देखा | तब पता चला कि अन्य विश्वविद्यालय में अल्प मात्रा में उनके साहित्य पर शोध-कार्य संपन्न हुआ हैं | कहानी साहित्य की दृष्टि से, विशेष रूप से न के बराबर हैं |

नासिरा का साहित्य पढ़ने हुए मुझे लगा कि नासिरा शर्मा एक सशक्त लेखिका है | उन्होंने अपनी कहानियों में मुस्लिम परिवेश को चुना हैं और उस परिवेश को

BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

लेकर अनेक घटना-प्रसंगों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया हैं | नासिरा की कहानियों में मुस्लिम परिवेश का व्यापक चित्रण और यथार्थ प्रतिबिंब दिखाई देता हैं |

नासिरा की कहानियों को पढ़ते समय विशेष रूप से मुस्लिम नारी जीवन ने मुझे प्रभावित किया हैं | आधुनिक मुस्लिम नारी, उसकी जीवन शैली इस विषय की ओर मैं विशेष रूप से आकृष्ठ हो गई | नासिरा शर्मा की कहानियों का अध्ययन कर मैं श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ.प्रकाश चिकुर्डेकर जी के पास पहुँची और विचार-विमर्श तथा गहन चिंतन के बाद **'नासिरा शर्मा की कहानियों में चित्रित मुस्लिम नारी जीवन'** विषय को अध्ययनार्थ निश्चित किया |

प्रस्तुत शोध का विषय और उद्देश्य :

स्वातंत्र्योत्तर काल में महिला लेखिकाओं के साहित्य का आगमन बड़ी तेज रफ्तार से हुआ | नासिरा उनमें से एक हैं | आज नासिरा ने आधुनिक हिंदी कहानी जगत में अपना एक अलग स्थान बनाया है | एक सशक्त लेखिका के रूप में उन्हें पहचाना जाता है | उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, अनुवाद, संपादन आदि विधाओं में लेखन किया हैं | उनके कथा साहित्य में चित्रित नारी उनके कहानी साहित्य का प्राण तत्व हैं |

नासिरा शर्मा स्वयं मुस्लिम नारी होने के कारण मुस्लिम समाज की ही नारी का यथार्थपरक चित्रण उन्होंने अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया हैं | नारी होने के नाते नारियों पर होनेवाले अत्याचार तथा मनोभावों का चित्रण भी उनकी कहानियों में यथार्थ रूप में प्राप्त होता हैं | इसी कारण इस विषय का महत्व अधिक है | परिणामत: **'नासिरा शर्मा की कहानियों में चित्रित मुस्लिम नारी जीवन'** मेरे शोध का विषय रहा है | मुस्लिम नारी का विवेचन विश्लेषण ही इस लघु-शोध प्रबंध का मूल उद्देश्य रहा है |

प्रस्तुत विषय का महत्त्व :

कहानी के उद्‌भव से लेकर मध्यकाल तक पुरूष कहानिकारों की संख्या काफी रही, लेकिन महिला कहानिकारों की संख्या अपेक्षा में अल्प रही हैं | उनमें भी महिलाओं पर लेखन करनेवाली महिला कहानिकारों की संख्या चुनिंदा हैं | बीसवीं सदी में महिला लेखिकाओं का साहित्य जगत में बड़ी संख्या में आगमन हुआ | स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में तो अधिकतर महिला रचनाकारें ने नारी चित्रण, नारी की समस्याएँ तथा नारी के मनोविज्ञान के चित्रण को विशेष रूप से प्रस्तुत किया है | आज के साहित्य में चित्रित नारी जीवन अनुसंधान का विषय बना हैं | फलत: उसका महत्त्व भी बढ़ रहा है |

नासिरा शर्मा पर पत्र-पत्रिकाओं में बहुत लिखा गया हैं | लेकिन स्वातंत्र्योत्तर काल के समीक्षा और शोध-कार्य को देखने से पता चलता है कि उनके साहित्य पर उनपर बहुत कम मात्रा में शोध-कार्य संपन्न हुआ है | लेकिन हाल ही में उनके साहित्य पर कुछ विश्वविद्यालयों में एम्.फिल. तथा पीएच्.डी. की उपाधि के लिए शोध-कार्य संपन्न हुआ हैं और हो रहा है | मेरा शोध-विषय उनसे अलग है |

नासिरा शर्मा की कहानियों का मुख्य विषय मुस्लिम नारी जीवन से जुड़ा हुआ है | उनके कहानी साहित्य में मुस्लिम नारी की वास्तविकता को उजागर करने का सफल प्रयास हुआ है | नारी होने के नाते नारी की समस्या को, उसके मनोभावों को उचित ढंग से पाठकों के सामन उन्होंने रखा हैं | अत: नासिरा शर्मा मुस्लिम नारी जीवन को चित्रित करनेवाली सफल चितेरा है | उन्होंने मुस्लिम नारी जीवन को रू-ब-रू कहानियों में चित्रित किया हैं जो कहानियों का प्राण तत्व हैं | मुस्लिम नारी जीवन को लेकर उनके कहानी साहित्य पर किसी भी शोध-कर्ता का शोध कार्य अब तक अलग रूप से संपन्न नहीं हुआ हैं | मेरा लघु शोध-प्रबंध इस अभाव की पूर्ति का प्रयास है |

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे सामने निम्न प्रश्न थे -

1. नासिरा शर्मा का व्यक्तिगत जीवन कैसा रहा है?
2. नासिरा शर्मा ने कौन-कौन-सी विधाओं में लेखन किया हैं?
3. नासिरा शर्मा की कहानियों का कथ्य कैसा है?
4. नासिरा शर्मा की कहानियों में कौन-कौन-सी समस्याएँ चित्रित हैं?
5. कहानियों में मुस्लिम नारी जीवन कैसा है ?
6. आधुनिक परिवेश को किस प्रकार प्रस्तुत किया है?
7. बटवारे के कारण किस प्रकार की समस्याएँ निर्माण हुई?

समग्र अध्ययन के पश्चात् उक्त प्रश्नों के जो उत्तर प्राप्त हुए वे निष्कर्ष के रूप में उपसंहार में दिए हैं |

शोध विषय की व्याप्ति :

वस्तुत: शोध विषय को सुचारू रूप से संपन्न करने के लिए उसका सुनियोजन होना अनिवार्य होता है | शोध गहन अध्ययन का विषय होता हैं | अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नांकित पाँच अध्यायों में विभाजित कर विषय का विवेचन प्रस्तुत किया है | वह इस प्रकार है -

प्रथम अध्याय : नासिरा शर्मा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

लघु शोध-प्रबंध के इस अध्याय में नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व का परिचय दिया है | उनका परिचय दो खंडों में विभाजित हैं | जिनमें नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व और साहित्य सृजन का विवेचन प्रस्तुत किया है | इन दो खंड़ों में नासिरा शर्मा का जन्म, परिवार, बचपन, शिक्षा, नौकरी, विवाह, व्यक्तित्व की विशेषताएँ और विभिन्न विधाओं का विवेचन प्रस्तुत किया हैं | अध्याय के अंत में जो निष्कर्ष सामने आए हैं वे प्रस्तुत हैं |

द्वितीय अध्याय : नासिरा शर्मा की कहानियों का कथ्य

इस अध्याय में लघु शोध-प्रबंध के लिए चुने दो कहानी संग्रह 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' तथा 'शीर्ष कहानियाँ' है। इन दो कहानी संग्रहों की सत्रह कहानियों का प्रकाशन, प्रकाशन काल तथा कहानियों का विवेचन प्रस्तुत किया हैं। अध्याय के अंत में जो निष्कर्ष प्राप्त हुए वे प्रस्तुत हैं।

तृतीय अध्याय : नासिरा शर्मा की कहानियों में चित्रित मुस्लिम नारी के रूप

इस अध्याय में मुस्लिम नारी के विभिन्न रूपों का विवेचन प्रस्तुत किया हैं। वेटी के रूप में नारी, सास के रूप में नारी, सौतन के रूप में नारी, निःसंतान नारी, स्वाभिमानी नारी, विद्रोही नारी आदि रूपों का विवेचन किया हैं। इसके पश्चात् निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य सामने आए हैं वे दिए हैं।

चतुर्थ अध्याय : नासिरा शर्मा की कहानियों में चित्रित मुस्लिम नारी की समस्याएँ

इस अध्याय में नारी को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं इसका विवेचन प्रस्तुत किया हैं। सौतन की समस्या, विधवा नारी की समस्या, अविवहित नारी की समस्या, असफल प्रेम की समस्या आदि समस्याओं का विवेचन किया हैं। प्राप्त तथ्यों के आधार पर अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

पंचम अध्याय : नासिरा शर्मा की कहानियों में नारी मनोविज्ञान

इस अध्याय में मनोविज्ञान की परिभाषाएँ, मनोविज्ञान का उद्देश्य तथा नारी मनोविज्ञान का विवेचन किया हैं। नारी मनोविज्ञान में 'अहं' की भावना, घृणा, घुटन, काम का उदात्तीकरण, मानसिक द्वंद्व, हीनता वोध, दृढ़ता आदि मुद्दों का विवेचन किया हैं। अंत में जो निष्कर्ष सामने आए वे दिए हैं।

उपसंहार

सभी अध्यायों का सार है निष्कर्ष जो उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध कार्य की उपलब्धियाँ :

शोध कार्य के दौरान हर एक शोध मे नई-नई उपलब्धियाँ मिलती हैं। इस लघु शोध-कार्य में महिला लेखिका की कहानियों में चित्रित नारी जीवन पर एक महिला दवारा शोध-कार्य संपन्न हुआ है। प्रस्तुत लघु शोध की उपलब्धियाँ-

1. विवेच्य कहानियों में परंपराओं में पिसती मुस्लिम नारी को चित्रित किया है। इन कहानियों को पढ़कर मुस्लिम नारी में अवश्य परिवर्तन आएगा इसमें संदेह नहीं।
2. मुस्लिम नारी को धर्म, कानून से दूर रखा जाता है जिस कारण 'मेहर' जैसे महत्त्वपूर्ण विधि का ज्ञान न होने से 'मेहर' की रकम को माफ करना पड़ता है। विवेच्य कहानियों को पढ़ने से मुस्लिम ही नहीं अन्य धर्म की नारी में भी चेतना जागृत होगी इसमें संदेह नहीं।
3. नारी की विशेषताओं और रिश्तों के आधार पर निर्मित विविध रूपों में सौतन का रूप साकार हुआ है जो कि एक आदर्श स्थापित करता है। उसके चरित्र पढ़कर सौतन के प्रति जो तिरस्कृत भावना है वह कम होगी।
4. विवेच्य कहानियों में नासिरा ने जो समस्याएँ चित्रित की है उन्हें पढ़ने से नारियों की संवेदनशीलता जागृत हो जाएगी और इन समस्याओं पर गंभीरता से सोचकर इनका हल निकाला जाएगा।
5. सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक समस्याओं के कारण नारी पर बढ़ रहे अन्याय, अत्याचारों का चित्रण है। इन समस्याओं का सामना करनेवाली नारी विविध रूप धारण कर परिस्थिति के सामने न झुककर परिस्थिति को ही सामने झुकाती है।

ऋणनिर्देश

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में सहायता करनेवाले तथा मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन और प्रोत्साहन देनेवाले गुरूजनों, हितैषियों एवं आत्मीयजनों के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन करना मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूँ।

श्रद्धेय गुरूवर्य **डॉ.प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर**, वरिष्ट अधिव्याख्याता, हिंदी विभाग, यशवंतराव चव्हाण वारणा महाविद्यालय, वारणानगर (कोल्हापुर) के निर्देशन में मुझे शोध-कार्य करने का परम-सौभाग्य प्राप्त हुआ है। निरंतर अध्ययन, अनुसंधान, अध्यापन एवं चिंतन में व्यस्त रहने के बावजूद भी आपने अपना अमूल्य समय देकर मेरे शोध-कार्य को संपन्न बनाने में सक्रिय योगदान किया है। आपका स्नेह, प्रोत्साहन तथा निर्देशन मेरे लिए जीवनभर की पूँजी है। शोध विषय से लेकर शोध-प्रबंध लेखन तक आपका अनमोल निर्देशन मिला। आपके संपर्क में कई बातों का मुझे अनायास ज्ञान मिला। आपके इस गुरू कर्त व्य के प्रति मैं सदैव नतमस्तक हूँ। आपके प्रति शब्दों में आभार व्यक्त करना मेरे लिए असंभव है, मैं आपके गुरू ऋण में रहना ही पसंद करूँगी। शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के हिंदी के वरिष्ठ समीक्षक **प्रो.डॉ.अर्जुन चव्हाण** की मैं आभारी हूँ। उन्होंने मुझे अपने व्यक्तिगत व्यस्तता से समय देकर समय-समय पर निर्देशन एवं सहयोग दिया। साथ-साथ हिंदी विभागाध्यक्षा, **प्रो.डॉ.पद्मा पाटील** तथा गुरूवर्य **प्रो.डॉ.पांडुरंग पाटील, डॉ.शोभा निंबालकर** और अतिथि अधिव्याख्याता **डॉ.सुलोचना अंतरेड्डी** ने भी मुझे निर्देशन एवं सहयोग दिया उनके प्रति भी मैं आभारी हूँ। शुरू से जिन्होंने मुझे प्रेरणा दी और निर्देशन किया वे **अशोक झेंडे**

(पाचुंब्री), **चिंदगे सर, अवघडे मामा,** युसिक विभाग के **बांदेचाँद बांदार, डॉ.मंगेश कोलेकर** के प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूँ।

श्रद्धेय, परमात्मा स्वरूप, आदर्शवादी मेरे पिताजी **श्री.यशवंत पाटील,** माता श्रीमती **सावित्री पाटील** का आशीर्वाद मुझे नित्य नेक काम करने की प्रेरणा देता रहा है। मेरी बड़ी बहनें तथा जीजाजी **श्री.दत्तात्रय पाटील-श्रीमती स्मिता** और **श्री.अजित पाटील-श्रीमती संगीता,** छोटे भाई-बहन - **रविंद्र, सारिका, नीलम,** बेटी समान प्यार करनेवाले चाचा-चाची **श्री.शिवाजी पाटील-श्रीमती छबुताई** और **श्री.सुरेश पाटील-श्रीमती सुमन** (कोल्हापुर)। इन सभी के अनवरत परिश्रम, स्नेह और आशीर्वाद से मैं आज तक की शिक्षा एवं अनुसंधान का कार्य पूरा कर सकी। इस लघु शोध-कार्य के लिए मुझे निरंतर प्रोत्साहित करनेवाले मेरे पति **श्री.नयन पाटील,** मेरी श्रद्धेय सासू माँ श्रीमती **सुमन** तथा सास-ससुर - **श्री.राजाराम पाटील-श्रीमती सुशीला** और **श्री.रावसो पाटील-श्रीमती** सविता इनके प्यार और प्रोत्साहन से मैं अपना शोध-कार्य पूरा कर सकी।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ज्ञानरूपी सागर में मुझ पर अपेक्षा से भी ज्यादा प्यार करनेवाले मेरे सीनियर, जूनियर तथा अलग-अलग क्षेत्र में करिअर करनेवाली सभी सहेलियाँ, मेरे एम्.फिल. कक्षा के सभी साथी और सहेलियों का भी मेरे अनुसंधान कार्य में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है। अत: उनके भविष्य के प्रति शुभकामनाएँ प्रकट कर उनके प्रति भी शुक्रिया अदा करती हूँ।

इस शोध-कार्य के दौरान संदर्भ ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं को उपलब्ध करा देने में शिवाजी विश्वविद्यालय के बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय के ग्रंथपाल एवं कर्मचारी **श्री.गणेश नेर्लेकर, पाटील, कवटे** आदियों के प्रति मैं विशेष आभारी हूँ। जिन्होंने पुस्तकों को जुटाने में तत्परता के साथ मेरी सहायता की है।

इस शोध-प्रबंध के संगणक टंकण का अत्यंत महत्त्वपूर्ण काम **मनीषा कुरले,** कोल्हापुर ने सुचारू रूप से तथा तत्परता से करके लघु शोध-प्रबंध प्रस्तुति के लिए उचित योगदान दिया। अत: मैं उनके प्रति विशेष आभारी हूँ।

अंत में जिन्होंने इस शोध-कार्य को संपन्न बनाने के लिए परोक्ष एवं प्रत्यक्ष रूप से सहयोग किया है, मैं उन सबके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ और इस शोध-प्रबंध को विद्वतजनों के सम्मुख विनम्रतापूर्वक परीक्षण हेतु प्रस्तुत करती हूँ।

शोध छात्रा

स्थल : कोल्हापुर

तिथि : 28 जनवरी, 2009

(कु.सीमा यशवंत पाटील)

अनुक्रमणिका